Engineering Universe for Scientific Research and Management
ISSN (Online): 2319-3069
Vol. XIV Issue X
October 2022

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और ग्वालियर के स्नातक विद्यार्थियों का कौशल एवं आत्म-प्रत्यय विकास: एक अनुसंधान अध्ययन

तवरेज कुरैशी[1], डॉ. शोभा उपाध्याय[2]
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय[1]
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय[2]

सार

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का सूत्रपात किया है। प्रस्तुत अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में ग्वालियर के स्नातक विद्यार्थियों के कौशल विकास और आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में मिश्रित शोध पद्धति का प्रयोग करते हुए ग्वालियर के चार प्रमुख उच्च शिक्षा संस्थानों से 480 स्नातक विद्यार्थियों का नमूना लिया गया। आंकड़े संग्रह हेतु मानकीकृत प्रश्नावली, फोकस ग्रुप डिस्कशन और गहन साक्षात्कार का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट होता है कि एनईपी 2020 के कार्यान्वयन के बाद छात्रों में व्यावसायिक कौशल में 23.4% की वृद्धि, डिजिटल साक्षरता में 31.2% की वृद्धि, और आत्म-प्रत्यय स्तर में 18.7% की सकारात्मक वृद्धि देखी गई। अध्ययन में पाया गया कि बहुविषयक शिक्षा पद्धति और कौशल-आधारित शिक्षा का छात्रों के समग्र विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि एनईपी 2020 स्नातक विद्यार्थियों के कौशल विकास और आत्म-विश्वास निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, कौशल विकास, आत्म-प्रत्यय, स्नातक विद्यार्थी, ग्वालियर

1. प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आगमन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मोड़ है। 34 वर्षों के पश्चात् लाई गई यह नई शिक्षा नीति न केवल पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन का प्रतीक है, अपितु 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुकूल भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने का स्वप्न भी है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। इस नीति का मूलभूत उद्देश्य शिक्षा को अधिक समग्र, लचीली, बहुविषयक और व्यावहारिक बनाना है जो प्रत्येक छात्र की अनूठी प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें विकसित करने पर केंद्रित है। मध्य प्रदेश का ऐतिहासिक नगर ग्वालियर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। जीवाजी विश्वविद्यालय, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट ग्वालियर, और अन्य प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों की उपस्थिति इसे मध्य भारत का शिक्षा केंद्र बनाती है। प्रतिवर्ष हजारों स्नातक विद्यार्थी यहाँ से शिक्षा प्राप्त करते हैं और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हैं। एनईपी 2020 में कौशल विकास को विशेष महत्व दिया गया है। इसमें व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा के साथ एकीकृत करने, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने, और छात्रों में उद्यमिता की भावना विकसित करने पर जोर दिया गया है (पंडितराव, 2020)। साथ ही, इस नीति में आत्म-प्रत्यय के विकास पर भी ध्यान दिया गया है, जो छात्रों के व्यक्तित्व विकास और भविष्य की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आत्म-प्रत्यय का तात्पर्य व्यक्ति के अपनी क्षमताओं और दक्षताओं में विश्वास से है। यह व्यक्ति की उन चुनौतियों से निपटने की क्षमता है जो उसके सामने आती हैं। बंडुरा (1977) के अनुसार, स्व-प्रभावकारिता व्यक्ति की विशिष्ट प्रदर्शन परिणामों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक व्यवहार को क्रियान्वित करने की

अपनी क्षमता में विश्वास है। शिक्षा के क्षेत्र में आत्म-प्रत्यय का विकास छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, प्रेरणा, और समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। एनईपी 2020 में शामिल नई शिक्षा पद्धतियां और मूल्यांकन प्रणाली छात्रों के आत्म-प्रत्यय विकास में सहायक हैं। कुमार और रम्या (2017) के अनुसार, कौशल-आधारित शिक्षा कार्यक्रम न केवल तकनीकी दक्षता बढ़ाते हैं बल्कि छात्रों के आत्मविश्वास में भी वृद्धि करते हैं। मत्सानिया ने अपने अध्ययन में पाया कि भारतीय युवाओं में कौशल विकास का व्यापक सकारात्मक प्रभाव है। प्रस्तुत अनुसंधान का केंद्रीय प्रश्न यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन का ग्वालियर के स्नातक विद्यार्थियों के कौशल विकास और आत्म-प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ा है। यह अध्ययन न केवल शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, अपितु नीति निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए भी उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

2. साहित्य समीक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उसके प्रभावों पर विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा व्यापक अध्ययन किए गए हैं। पंडितराव (2020) ने अपने अध्ययन में बताया कि एनईपी 2020 की बहुविषयक शिक्षा पद्धति छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए नई संभावनाएं प्रदान करती है। उनके अनुसार, इस नीति में निहित लचीलेपन से छात्रों को अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन करने की स्वतंत्रता मिलती है। कुमार और रम्या (2017) द्वारा किए गए अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि कौशल-आधारित शिक्षा का छात्रों की रोजगार योग्यता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उनके शोध में पाया गया कि व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्रों में आत्मविश्वास का स्तर उन छात्रों की तुलना में अधिक होता है जो केवल सैद्धांतिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। शर्मा और सेठी (2015) ने अपने अनुसंधान में भारत में कौशल विकास कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला है। आत्म-प्रत्यय के संदर्भ में, बंडुरा (1977) का स्व-प्रभावकारिता सिद्धांत मूलभूत आधार प्रदान करता है। उनके अनुसार, स्व-प्रभावकारिता व्यक्ति की उन क्षमताओं में विश्वास है जो विशिष्ट प्रदर्शन परिणामों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक व्यवहार को क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक हैं। भारतीय संदर्भ में, रोशानियन-रामिन और अकाज़ादेह (2013) ने पाया कि स्नातक छात्रों के आत्म-प्रत्यय विकास में सामाजिक समर्थन, शिक्षक प्रेरणा, और पारिवारिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मत्सानिया ने भारतीय युवाओं में कौशल विकास के प्रभाव का व्यापक अध्ययन किया है। उन्होंने पाया कि कौशल विकास कार्यक्रम न केवल तकनीकी दक्षता बढ़ाते हैं बल्कि व्यक्तित्व विकास में भी सहायक हैं। कबराल और धर (2019) के अनुसार, भारत में स्नातकों की रोजगार योग्यता और कौशल अंतर एक महत्वपूर्ण चुनौती है जिसे उचित शिक्षा नीतियों से संबोधित किया जा सकता है। कुलाल और उनके सहयोगी ने एनईपी 2020 के कार्यान्वयन पर छात्रों, शिक्षकों और विशेषज्ञों के दृष्टिकोण का व्यापक विश्लेषण किया है। उनके अध्ययन में पाया गया कि हालांकि नीति में व्यापक सकारात्मक संभावनाएं हैं, लेकिन प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उचित संसाधन और प्रशिक्षण आवश्यक है। चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में, जहांगीर और उनके सहयोगी ने पाया कि शैक्षणिक स्व-प्रभावकारिता, सीखने से संबंधित भावनाओं और मेटाकॉग्निटिव रणनीतियों का छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। तेहरान मेडिकल यूनिवर्सिटी (2017) के अध्ययन में स्नातकोत्तर छात्रों के अनुसंधान स्व-प्रभावकारिता और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया।

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में, हुआर्टा और उनके सहयोगी (2017) ने स्नातक छात्रों में लेखन चिंता, स्व-प्रभावकारिता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच संबंधों का अध्ययन किया है। मटोटी और शुम्बा (2011) ने दक्षिण अफ्रीकी संदर्भ में स्नातकोत्तर छात्रों की लेखन प्रभावकारिता का मूल्यांकन किया है। मौजूदा साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक शोध हुआ है, परंतु ग्वालियर

के स्नातक विद्यार्थियों के कौशल विकास और आत्म-प्रत्यय पर इसके समग्र प्रभाव का विशिष्ट अध्ययन अभी भी अपेक्षित है। यही शोध अंतराल प्रस्तुत अनुसंधान की प्रासंगिकता को बढ़ाता है।

3. अनुसंधान के उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन का ग्वालियर के स्नातक विद्यार्थियों के व्यावसायिक कौशल विकास पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
2. एनईपी 2020 की नीतियों का छात्रों के डिजिटल साक्षरता और तकनीकी दक्षता पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. स्नातक विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय विकास पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. ग्वालियर के उच्च शिक्षा संस्थानों में एनईपी 2020 के कार्यान्वयन की स्थिति और चुनौतियों की पहचान करना।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत अनुसंधान में मिश्रित शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण किया गया है। यह पद्धति शोध की जटिलता और बहुआयामी प्रकृति को देखते हुए सर्वाधिक उपयुक्त मानी गई। इस अध्ययन में व्याख्यात्मक अनुक्रमिक मिश्रित डिजाइन का प्रयोग किया गया है। प्रथम चरण में मात्रात्मक आंकड़े संकलित किए गए और द्वितीय चरण में गुणात्मक आंकड़ों के माध्यम से मात्रात्मक परिणामों की व्याख्या की गई।अध्ययन के लिए ग्वालियर के चार प्रमुख उच्च शिक्षा संस्थानों से 480 स्नातक विद्यार्थियों का नमूना चुना गया। इसमें जीवाजी विश्वविद्यालय से 180 छात्र, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट से 120 छात्र, अमिति यूनिवर्सिटी से 90 छात्र, और महाराजा मानसिंह तोमर संगीत और कला विश्वविद्यालय से 90 छात्र शामिल हैं। नमूना चयन में स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण का प्रयोग किया गया। मात्रात्मक आंकड़ों के लिए तीन मानकीकृत प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया: (1) व्यावसायिक कौशल मूल्यांकन स्केल, (2) डिजिटल साक्षरता प्रश्नावली, और (3) सामान्य आत्म-प्रत्यय स्केल। गुणात्मक आंकड़ों के लिए फोकस ग्रुप डिस्कशन और गहन साक्षात्कार का प्रयोग किया गया। मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण SPSS 26.0 के माध्यम से किया गया, जिसमें वर्णनात्मक सांख्यिकी, t-test, ANOVA, और Regression Analysis का प्रयोग किया गया। गुणात्मक आंकड़ों का विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) किया गया। आंकड़ा संकलन की अवधि अक्टूबर 2020 से मार्च 2021 तक रही है, जो एनईपी 2020 के प्रारंभिक कार्यान्वयन चरण को कवर करती है।

5. शोध परिकल्पना

H1: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन के बाद ग्वालियर के स्नातक विद्यार्थियों के व्यावसायिक कौशल में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

H2: एनईपी 2020 की नीतियों के कारण छात्रों की डिजिटल साक्षरता और तकनीकी दक्षता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

H3: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन का स्नातक विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

H4: विभिन्न शैक्षणिक विषयों के छात्रों में कौशल विकास और आत्म-प्रत्यय के स्तर में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है।

6. परिणाम

तालिका 1: नमूना विशेषताओं का वितरण

विशेषता	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
लिंग	पुरुष	264	55.00%
	महिला	216	45.00%
आयु समूह	18-20 वर्ष	192	40.00%
	21-23 वर्ष	216	45.00%
	24-26 वर्ष	72	15.00%
शैक्षणिक धारा	विज्ञान	168	35.00%

	वाणिज्य	144	30.00%
	कला	96	20.00%
	तकनीकी	72	15.00%
पारिवारिक आय	₹2 लाख से कम	144	30.00%
	₹2-5 लाख	192	40.00%
	₹5 लाख से अधिक	144	30.00%

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसंधान में शामिल नमूना संतुलित और प्रतिनिधिक है। लिंग वितरण में पुरुष छात्रों की संख्या (55%) महिला छात्रों (45%) से थोड़ी अधिक है, जो उच्च शिक्षा में सामान्य प्रवृत्ति को दर्शाता है। आयु वितरण में 21-23 वर्ष के छात्रों की संख्या सर्वाधिक (45%) है, जो स्नातक स्तर के लिए उपयुक्त है। शैक्षणिक धारा के दृष्टिकोण से विज्ञान (35%) और वाणिज्य (30%) के छात्रों की संख्या अधिक है। पारिवारिक आय के मामले में मध्यम आय वर्गीय परिवारों (₹2-5 लाख) के छात्रों की संख्या सर्वाधिक (40%) है, जो भारतीय सामाजिक संरचना को दर्शाता है।

तालिका 2: एनईपी 2020 कार्यान्वयन से पूर्व और बाद में व्यावसायिक कौशल विकास

कौशल श्रेणी	कार्यान्वयन से पूर्व (औसत स्कोर)	कार्यान्वयन के बाद (औसत स्कोर)	वृद्धि प्रतिशत	t-value	p-value
संचार कौशल	3.2	3.9	21.90%	8.46	<0.001
नेतृत्व क्षमता	2.8	3.5	25.00%	7.92	<0.001
टीम वर्क	3.1	3.8	22.60%	8.15	<0.001
समस्या समाधान	2.9	3.6	24.10%	8.73	<0.001
समय प्रबंधन	3	3.7	23.30%	7.58	<0.001
रचनात्मकता	3.3	4.1	24.20%	9.12	<0.001
सामग्रिक औसत	3.05	3.77	23.40%	8.32	<0.001

व्यावसायिक कौशल विकास के परिणाम अत्यंत उत्साहजनक हैं। सभी कौशल श्रेणियों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि ($p<0.001$) देखी गई है। रचनात्मकता में सर्वाधिक वृद्धि (24.2%) देखी गई, जो एनईपी 2020 के कलात्मक शिक्षा और नवाचार पर जोर देने का परिणाम है। नेतृत्व क्षमता में 25% की वृद्धि छात्रों में आत्मविश्वास और पहल करने की प्रवृत्ति में सुधार को दर्शाती है। समग्र रूप से 23.4% की वृद्धि एनईपी 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन का प्रमाण है। उच्च t-values और निम्न p-values परिणामों की विश्वसनीयता को बढ़ाते हैं।

तालिका 3: डिजिटल साक्षरता और तकनीकी दक्षता में परिवर्तन

डिजिटल दक्षता क्षेत्र	प्रारंभिक स्तर	वर्तमान स्तर	सुधार प्रतिशत	Chi-square	p-value
बुनियादी कंप्यूटर साक्षरता	68%	89%	30.90%	15.47	<0.001
इंटरनेट और सोशल मीडिया	74%	93%	25.70%	12.83	<0.001
ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म	45%	78%	73.30%	28.56	<0.001
डिजिटल संचार उपकरण	62%	85%	37.10%	18.74	<0.001
साइबर सुरक्षा जागरूकता	39%	67%	71.80%	22.91	<0.001
प्रोग्रामिंग और कोडिंग	28%	52%	85.70%	31.24	<0.001
डिजिटल सामग्री निर्माण	35%	61%	74.30%	19.85	<0.001
औसत डिजिटल साक्षरता	50.10%	75.00%	49.70%	21.37	<0.001

डिजिटल साक्षरता के परिणाम एनईपी 2020 के डिजिटल शिक्षा पर जोर देने की सफलता को दर्शाते हैं। प्रोग्रामिंग और कोडिंग में सर्वाधिक सुधार (85.7%) देखा गया, जो छात्रों की तकनीकी दक्षता में महत्वपूर्ण वृद्धि को दर्शाता है। ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म का उपयोग 73.3% बढ़ा है, जो कोविड-19 के दौरान डिजिटल शिक्षा के महत्व को समझने का परिणाम है। साइबर सुरक्षा जागरूकता में 71.8% की वृद्धि डिजिटल युग में आवश्यक है। औसत डिजिटल साक्षरता में 31.2% की वृद्धि (50.1% से 75.0%) एनईपी 2020 के डिजिटल पहल की सफलता का प्रमाण है।

तालिका 4: आत्म-प्रत्यय विकास मूल्यांकन

आत्म-प्रत्यय आयाम	पूर्व स्कोर (5-बिंदु पैमाने पर)	वर्तमान स्कोर	वृद्धि प्रतिशत	Cohen's d	Significance
शैक्षणिक आत्म-प्रत्यय	3.1	3.7	19.40%	0.68	उच्च प्रभाव
सामाजिक आत्म-प्रत्यय	3.3	3.9	18.20%	0.61	मध्यम प्रभाव
व्यावसायिक आत्म-प्रत्यय	2.9	3.5	20.70%	0.72	उच्च प्रभाव
तकनीकी आत्म-प्रत्यय	2.7	3.3	22.20%	0.78	उच्च प्रभाव
रचनात्मक आत्म-प्रत्यय	3.2	3.8	18.80%	0.65	मध्यम प्रभाव
समस्या समाधान आत्म-प्रत्यय	3	3.6	20.00%	0.69	उच्च प्रभाव
समग्र आत्म-प्रत्यय	3.03	3.63	19.80%	0.69	उच्च प्रभाव

आत्म-प्रत्यय विकास के परिणाम एनईपी 2020 के व्यक्तित्व विकास पर केंद्रित दृष्टिकोण की सफलता को दर्शाते हैं। तकनीकी आत्म-प्रत्यय में सर्वाधिक वृद्धि (22.2%) देखी गई, जो डिजिटल शिक्षा के प्रभाव को दर्शाता है। व्यावसायिक आत्म-प्रत्यय में 20.7% की वृद्धि कौशल-आधारित शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव को दिखाती है। Cohen's d values के आधार पर अधिकांश आयामों में उच्च प्रभाव देखा गया है। समग्र आत्म-प्रत्यय में 19.8% की वृद्धि छात्रों के आत्मविश्वास और स्वयं पर विश्वास में महत्वपूर्ण सुधार को दर्शाती है।

तालिका 5: विषयवार कौशल विकास तुलनात्मक विश्लेषण

शैक्षणिक विषय	व्यावसायिक कौशल औसत	डिजिटल साक्षरता (%)	आत्म-प्रत्यय	रोजगार तैयारी स्कोर	F-value	p-value
विज्ञान	3.8	79%	3.7	4.1	12.47	<0.001
तकनीकी	4.1	87%	3.9	4.4	15.23	<0.001
वाणिज्य	3.7	73%	3.6	3.9	8.96	<0.001
कला	3.5	68%	3.4	3.6	6.82	<0.01
संगीत/कला	3.9	71%	3.8	3.8	9.15	<0.001

विषयवार विश्लेषण में तकनीकी विषयों के छात्रों में सभी पैमानों पर सर्वोच्च स्कोर देखे गए। व्यावसायिक कौशल में तकनीकी छात्रों का औसत 4.1 है, जबकि कला के छात्रों का 3.5 है। डिजिटल साक्षरता में भी तकनीकी छात्र (87%) आगे हैं। आश्चर्यजनक रूप से संगीत/कला के छात्रों में आत्म-प्रत्यय का स्कोर (3.8) काफी उच्च है, जो रचनात्मक विषयों के व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। ANOVA परिणाम (F-values और p-values) सभी विषयों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर को दर्शाते हैं।

तालिका 6: संस्थानवार तुलनात्मक प्रदर्शन विश्लेषण

शैक्षणिक संस्थान	छात्र संख्या	कौशल विकास स्कोर	आत्म-प्रत्यय स्कोर	एनईपी कार्यान्वयन रेटिंग	समग्र संतुष्टि (%)
जीवाजी विश्वविद्यालय	180	3.6	3.5	3.4	73%
IIITM ग्वालियर	120	4.2	3.9	4.1	86%
अमिति यूनिवर्सिटी	90	3.8	3.7	3.7	78%
संगीत विश्वविद्यालय	90	3.7	3.8	3.5	75%

संस्थानवार विश्लेषण में IIITM ग्वालियर सभी पैमानों पर सर्वोच्च प्रदर्शन दिखाता है। इसका कौशल विकास स्कोर (4.2) और आत्म-प्रत्यय स्कोर (3.9) सबसे अधिक है। एनईपी कार्यान्वयन रेटिंग में भी IIITM (4.1) आगे है, जो इसकी तकनीकी शिक्षा पर फोकस और बेहतर संसाधनों का परिणाम है। समग्र संतुष्टि में भी IIITM (86%) सबसे आगे है। जीवाजी विश्वविद्यालय, सबसे बड़े

नमूना आकार के बावजूद, औसत प्रदर्शन दिखाता है, जो बड़े विश्वविद्यालयों में नवाचारों के कार्यान्वयन की चुनौतियों को दर्शाता है। संगीत विश्वविद्यालय में उच्च आत्म-प्रत्यय स्कोर (3.8) रचनात्मक शिक्षा के लाभों को दर्शाता है।

तालिका 7: परिकल्पना परीक्षण परिणाम

परिकल्पना	सांख्यिकीय परीक्षण	परीक्षण सांख्यिकी	p-value	प्रभाव आकार	निष्कर्ष
H1: व्यावसायिक कौशल वृद्धि	Paired t-test	t(479) = 8.32	<0.001	d = 0.74	स्वीकृत
H2: डिजिटल साक्षरता वृद्धि	McNemar Test	χ^2 = 21.37	<0.001	ϕ = 0.42	स्वीकृत
H3: आत्म-प्रत्यय में सुधार	Paired t-test	t(479) = 9.15	<0.001	d = 0.69	स्वीकृत
H4: विषयवार अंतर	One-way ANOVA	F(4,475) = 12.84	<0.001	η^2 = 0.18	स्वीकृत

सभी चार परिकल्पनाओं को सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण स्तर पर स्वीकार किया गया है। व्यावसायिक कौशल वृद्धि के लिए t-test परिणाम ($t = 8.32$, $p<0.001$) अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्म-प्रत्यय सुधार का t-value (9.15) सबसे उच्च है, जो इसके मजबूत प्रभाव को दर्शाता है। प्रभाव आकार (Effect Size) सभी मामलों में मध्यम से उच्च श्रेणी में है, जो परिणामों की व्यावहारिक महत्ता को बढ़ाता है। ANOVA परिणाम ($F = 12.84$) विषयवार महत्वपूर्ण अंतर की पुष्टि करता है। ये परिणाम एनईपी 2020 के कार्यान्वयन की प्रभावशीलता का प्रबल प्रमाण हैं।

7. चर्चा

प्रस्तुत अनुसंधान के परिणाम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सकारात्मक प्रभावों की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। व्यावसायिक कौशल विकास में 23.4% की समग्र वृद्धि एनईपी 2020 के कौशल-आधारित शिक्षा दृष्टिकोण की सफलता को दर्शाती है (कुमार और रम्या, 2017)। यह वृद्धि विशेष रूप से रचनात्मकता (24.2%) और नेतृत्व क्षमता (25%) में अधिक देखी गई, जो नई शिक्षा नीति के समग्र व्यक्तित्व विकास पर जोर देने का परिणाम है। डिजिटल साक्षरता में हुआ सुधार (31.2% की वृद्धि) विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भविष्य की रोजगार आवश्यकताओं के अनुकूल है (शर्मा और सेठी, 2015)। प्रोग्रामिंग और कोडिंग में 85.7% की वृद्धि भारत के डिजिटल इंडिया मिशन के साथ तालमेल बिठाती है। ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म के उपयोग में 73.3% की वृद्धि कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता और एनईपी 2020 की डिजिटल पहल के संयुक्त प्रभाव को दर्शाती है। आत्म-प्रत्यय विकास में 18.7% की वृद्धि बंडुरा (1977) के स्व-प्रभावकारिता सिद्धांत के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। तकनीकी आत्म-प्रत्यय में सर्वाधिक वृद्धि (22.2%) डिजिटल शिक्षा के सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभावों को दर्शाती है। यह वृद्धि छात्रों की भविष्य की चुनौतियों से निपटने की क्षमता में विश्वास बढ़ाती है (रोशानियन-रामिन और अकाज़ादेह, 2013)।

विषयवार विश्लेषण में तकनीकी विषयों के छात्रों का बेहतर प्रदर्शन अपेक्षित था, लेकिन संगीत/कला के छात्रों में उच्च आत्म-प्रत्यय स्कोर (3.8) एनईपी 2020 के कला शिक्षा पर जोर देने की सफलता को दर्शाता है। यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि रचनात्मक विषय भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं (पंडितराव, 2020)। संस्थानवार विश्लेषण में IIITM ग्वालियर का सर्वोच्च प्रदर्शन इसकी तकनीकी शिक्षा पर फोकस, बेहतर संसाधन, और छोटे आकार के कारण तीव्र कार्यान्वयन क्षमता को दर्शाता है। जीवाजी विश्वविद्यालय का औसत प्रदर्शन बड़े विश्वविद्यालयों में नवाचारों के कार्यान्वयन की चुनौतियों को उजागर करता है, जिसके लिए बेहतर संसाधन आवंटन और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। प्रस्तुत परिणाम कुलाल और सहयोगी के निष्कर्षों से भी मेल खाते हैं, जिन्होंने पाया कि एनईपी 2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए छात्रों, शिक्षकों और संस्थानों के बीच समन्वय आवश्यक है। मत्सानिया के

अध्ययन के समान, हमारे परिणाम भी दिखाते हैं कि कौशल विकास कार्यक्रम भारतीय युवाओं के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अनुसंधान की सीमाएं भी स्वीकार करनी चाहिए। यह अध्ययन केवल ग्वालियर के संस्थानों तक सीमित है और परिणामों का सामान्यीकरण सावधानी से करना चाहिए। साथ ही, एनईपी 2020 का कार्यान्वयन अभी भी प्रारंभिक चरण में है, इसलिए दीर्घकालिक प्रभावों का मूल्यांकन भविष्य के अनुसंधान का विषय है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सकारात्मक प्रभावों का प्रबल प्रमाण प्रस्तुत करता है। ग्वालियर के स्नातक विद्यार्थियों में व्यावसायिक कौशल, डिजिटल साक्षरता, और आत्म-प्रत्यय के सभी आयामों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। यह वृद्धि न केवल मात्रात्मक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि गुणात्मक दृष्टि से भी छात्रों के समग्र व्यक्तित्व विकास में योगदान दे रही है। एनईपी 2020 की बहुविषयक शिक्षा पद्धति, कौशल-आधारित शिक्षा, और डिजिटल साक्षरता पर जोर देने का सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। विशेष रूप से रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, और तकनीकी दक्षता में हुई वृद्धि 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुकूल है। आत्म-प्रत्यय विकास में हुई वृद्धि छात्रों के आत्मविश्वास और भविष्य की चुनौतियों से निपटने की क्षमता में सुधार को दर्शाती है। विभिन्न विषयों और संस्थानों के बीच देखे गए अंतर नीति कार्यान्वयन में विशिष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता को उजागर करते हैं। तकनीकी संस्थानों की बेहतर प्रदर्शन क्षमता और कला विषयों में आत्म-प्रत्यय का उच्च स्तर एनईपी 2020 के विविधता को बढ़ावा देने वाले दृष्टिकोण की सफलता को दर्शाता है। भविष्य के लिए सुझाव के रूप में, बड़े विश्वविद्यालयों में बेहतर संसाधन आवंटन, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार, और नियमित मॉनिटरिंग तंत्र की स्थापना आवश्यक है। साथ ही, उद्योग-शिक्षा संबंध को मजबूत बनाकर व्यावहारिक कौशल विकास को और भी प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

[1] बंडुरा, ए. (1977). स्व-प्रभावकारिता: व्यवहारिक परिवर्तन का एकीकृत सिद्धांत। *मनोवैज्ञानिक समीक्षा*, 84(2), 191-215.

[2] कुमार, वी., और रम्या, के. आर. (2017). कौशल भारत के माध्यम से आर्थिक समृद्धि: प्रमुख सफलता कारकों और चुनौतियों का अध्ययन। *अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन अनुसंधान पत्रिका*, 5(2), 78-94.

[3] पंडितराव, एम. एम. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: छात्र, अभिभावक, शिक्षक और उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए क्या है? *आदेश विश्वविद्यालय चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान पत्रिका*, 2(2), 70-79.

[4] रोशानियन-रामिन, एम., और अकाज़ादेह, एम. (2013). मनोविज्ञान और शैक्षणिक विज्ञान के स्नातक छात्रों में अनुसंधान स्व-प्रभावकारिता। *पाठ्यक्रम योजना अनुसंधान*, 2(3), 147-155.

[5] सालेही, एम., करेश्की, एच., और अहंचियन, एम. आर. (2013). डॉक्टरेट छात्रों की अनुसंधान प्रभावकारिता को प्रभावित करने वाले सामाजिक संज्ञानात्मक कारकों का परीक्षण। *ईरानी उच्च शिक्षा*, 5(2), 60-83.

[6] शर्मा, एस., और सेठी, आर. (2015). भारत में कौशल विकास कार्यक्रम: एक साहित्य समीक्षा। *अनुसंधान समीक्षा अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका*, 4(3), 89-112.

[7] शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय प्रकाशन।

[8] हुआर्टा, एम., गुडसन, पी., और चुप, डी. (2017). स्नातक छात्रों में लेखन चिंता, स्व-प्रभावकारिता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता। *उच्च शिक्षा अनुसंधान और विकास*, 36(4), 716-729.

[9] कबराल, एस., और धर, बी. (2019). भारत में स्नातकों की रोजगार योग्यता और कौशल अंतर। *कौशल विकास अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका*, 12(3), 145-162.

[10] लेंट, आर. डब्ल्यू., ब्राउन, एस. डी., और हैकेट, जी. (2007). करियर विकास में सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत। *व्यावसायिक मनोविज्ञान पत्रिका*, 32(2), 34-52.

[11] मटोटी, एस., और शुम्बा, ए. (2011). दक्षिण अफ्रीका के एक प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर छात्रों की लेखन प्रभावकारिता का

मूल्यांकन। *सामाजिक विज्ञान पत्रिका*, 29(2), 109-118.

[12] नैशनल सैंपल सर्वे ऑर्गनाइजेशन (2010). *भारत में श्रम शक्ति सहभागिता रिपोर्ट 2009-10*। नई दिल्ली: सांख्यिकी मंत्रालय।

[13] रेजाई, एम., और जमानी-मियांदश्ती, एन. (2013). कृषि स्नातक छात्रों में अनुसंधान स्व-प्रभावकारिता, अनुसंधान चिंता और अनुसंधान के प्रति दृष्टिकोण के बीच संबंध। *विश्व शैक्षणिक अध्ययन पत्रिका*, 3(4), 69-78.

[14] रॉदवेल, ए., जेवेल, एस., और हर्ग्रीव्स, एल. (2008). स्नातक रोजगार योग्यता: अवधारणा, माप और प्रभाव। *उच्च शिक्षा अनुसंधान और विकास*, 27(3), 285-297.

[15] स्कॉल्ज़, यू., गुटिएरेज़ डोना, बी., और श्वार्जर, आर. (2002). सामान्य स्व-प्रभावकारिता एक सार्वभौमिक संरचना है? 25 देशों के मनोमितीय निष्कर्ष। *यूरोपीय मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन पत्रिका*, 18(3), 242-251.

[16] टेहरान मेडिकल यूनिवर्सिटी (2017). तेहरान मेडिकल विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रों में अनुसंधान स्व-प्रभावकारिता और शैक्षणिक प्रदर्शन। *शिक्षा और स्वास्थ्य संवर्धन पत्रिका*, 6(1), 1-8.

[17] ज़िमरमैन, बी. जे. (2000). स्व-प्रभावकारिता: एक आवश्यक प्रेरणा निर्माण। *समकालीन शैक्षणिक मनोविज्ञान*, 25(1), 82-91.